M.A – II SEMESTER CC-4.

78

शौरसेनी आगम साहित्य का इतिहास

इकाई (2) शौरसेनी टीका साहित्य

Q-1 शिवार्य और उनकी भगवती आराधना को संक्षेप में प्रस्तुत करें.

Ans- शिवार्य प्राचीन दिगम्बर आचार्य थे जिन्होंने भगवती आराधना नामक शौरसेनी प्राकृत ग्रन्थ लिखा है। इनके ग्रन्थ भगवती आराधना पर 7वी-8वी शताब्दी में अपराजित सूरी द्वारा टीका लिखी जा चुकी थी।

भगवती आराधना एक प्राचीन ग्रन्थ है। ग्रन्थ के अन्त में आयी हुई प्रशस्ति से अवगत होता है कि आर्य जिननन्दि गणि, आर्य सर्वगुप्त गणि और आर्य मित्रनन्दि गणि के चरणों में अच्छी तरह सूत्र और उनका अर्थ समझ कर तथा पूर्वाचार्यों की रचना को उपजीव्य जानकर पाणितल भोजी शिवार्य ने इस ग्रन्थ की रचना की।

प्रशस्ति में जिन तीन गुरुओं का नाम आया है, उनके पूर्व आर्य विशेषण है। अतः ज्ञात होता है कि इनके नाम में भी आर्य शब्द विशेषण ही है। इसी कारण श्री प्रेमी जी ने अनुमान किया था कि आर्य शिवनन्दि, शिवगुप्त, शिवकोटि का उल्लेख मिलता है पर आदिपुराण के उल्लेख के आधार पर उन्हें समन्तभद्र के शिवकोटि और शिवायन दो शिष्य बतलाये हैं और उन्हीं के अन्वय में वीरसेन, जिनसेन को बताया है। शिवार्य का समय विक्रम की तीसरी शती है। यह भी संभव कि कुन्दकुन्द के कुछ ही समय पश्चात इनका जन्म हुआ हो। ये यापनीय संघ के आचार्य माने जाते हैं। पर यह अभी विचारणीय है।

इस ग्रन्थ मे सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र और सम्यक्तप इन चार आराधना ग्रन्थ का निरूपण किया गया है। इस ग्रन्थ मे 2166 गाथाएँ और 40 अधिकार है। इस ग्रन्थ पर अपराजित सूरि की विजयोदया टीका, आशाधर की मूलाराधना दर्पण टीका, प्रभाचन्द्र की आराधना पञ्जिका और शिवजित अरुण की भावार्थ दीपिका टीका उपलब्ध है। इससे इसकी लोकप्रियता जानी जा सकती है। इसकी कई रचना । या गाथाएँ आवश्यक नियुक्ति, बृहत्कल्पभाष्य, भत्तपइण्णा, संथारग आदि श्वेताम्बर आगम ग्रन्थों मे भी पायी जाती है।

इस ग्रन्थ मे 17 प्रकार के मरण बताये गये है। इनमे पंडित-पंडित मरण, पंडित-पंडित मरण और बाल-पंडित मरण को श्रेष्ठ कहा है। पंडित मरण मे भक्त प्रतिज्ञामरण को प्रशस्त माना गया है। लिङ्गाधिकार मे आचेलक्य, लोच, देह से ममत्व त्याग और प्रतिलेखन ये चार निर्ग्रन्थ लिङ्ग के चिन्ह बताये है। अनियताधिकार मे नाना देशो मे विहार करने के गुणों के साथ अनेक रीतिरिवाज, भाषा और शास्त्र आदि की कुशलता प्राप्त करने का विधान है। भावनाधिकार मे तपोभावना, श्रुतभावना, सत्यभावना, एकत्वभावना और धृतिबलभावना का निरूपण है। सल्लेखनाधिकार मे सल्लेखनाधिकार मे सल्लेखना के साथ बाह्य और अन्तरंग तपों का का वर्णन किया है। आर्यिकाओं को किस प्रकार संघ मे रहना चाहिए, इसके लिए अनेक नियमो का प्रतिपादन किया गया है। मार्गणा अधिकार मे आचार, जीत और कल्प का उल्लेख है। आचेलक्य का समर्थन किया है और टीकाकार अपराजित सूरि ने आचारांग, सूत्रकृतांग, निशीथ, बृहत्कल्प सूत्र, और

उत्तराध्ययन के प्रमाण भी उपस्थित किये हैं। आभ्यन्तर शुद्धि पर ज़्यादा जोर दिया गया है।

गाथा

घोडयलद्दि समाणस्स तस्स अब्भंतरंमि कुथिदस्स,
बाहिरकरणं कि से काहिदि बगणिहुदकरणस्स ॥

अर्थात :- जैसे घोड़े की लीद बाहर से चिकनी दिखाई देती है, पर भीतर से दुर्गन्ध के कारण महा मलिन है।

इसी प्रकार जो मुनी बाह्य आडम्बर तो धारण करता है, पर अन्तरंग शुद्ध नहीं रखता है, उनका आचरण बगुले के समान होता है।

The end